M.A. Fourth Semester

Third Paper

Agriculture Geography

BY

Dr. Shivanand Yadav

Assistant professor and Head

Department of Geography

Harishchandra P.G.College ,Varanasi

चावल मुख्यत: दक्षिण-पूर्वी एशिया में उगाया जाता है, क्यों?

संसार की सबसे अधिक जनसंख्या का भोजन चावल है। चावल मानसूनी जलवायु और उष्णकटिबन्धीय आर्द्र जलवायु का पौधा है। संसार के समस्त चावल उत्पादन का लगभग 92% चावल एशिया महाद्वीप में उत्पन्न होता है। जिसका 95% दक्षिण, दक्षिण-पूर्व एवं पूर्वी एशिया के मानसूनी देशों में होता है। चावल की प्रति एकड़ उपज अन्य सब अनाजों से ज्यादा होती है। इसलिए चावल सबसे अधिक जनसंख्या का भरण-पोषण कर सकता है। विश्व की लगभग 50% जनसंख्या का यह भोजन है।

ऐसे भाग में जहाँ तापमान वर्ष भर ऊँचा रहता है तथा वर्षा 200 सेमी या अधिक होती है, वर्ष में एक ही खेत से दो या तीन फसलें उगायी जाती हैं। इस प्रकार जहाँ उच्चावच, मिट्टी, तापक्रम तथा वर्षा उपयुक्त है, चावल की खेती होती है। दक्षिण-पूर्वी एशिया संसार का 90% चावल उत्पन्न करता है जिसमें चीन 36%, भारत 21%, इण्डोनेशिया 8.2% बांगलादेश 5.5%, थाइलैण्ड 3.9% वियतनाम 3.3% जापान 2.8% शेष अन्य देश बर्मा, पाकिस्तान, श्रीलंका आदि उत्पादित करते हैं। प्रायः सभी सिंचित डेल्टा, बाढ़ के मैदान, तटीय मैदान एवं सीढ़ीदार तथा निचले भागों में चावल प्रधान फसल है। आसाम में कुल कृषि भूमि के 95% थाइलैण्ड में 66% बर्मा में 50%, जापान में 40% तथा चीन एवं भारत में एक-चौथाई भूमि पर चावल की खेती की जाती है। अधिक जनसंख्या घनत्व के कारण मानसून एशिया के कुछ ही देश (बर्मा, थाइलैण्ड, कम्पूचिया, ताइवान तथा दक्षिण वियतनाम) चावल का निर्यात करते हैं। चावल उत्पादक प्रदेश तथा सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व का घनिष्ठ संबंध है। गंगा, ब्रह्मपुत्र, इरावदी, मेनम, मीकांग, सीक्यांग, यांग्टीसीक्यांग के निचले मैदानी डेल्टाई भाग मुख्य चावल उत्पादक भाग हैं। मानसून एशिया के सघन जनसंख्या वाले देशों अर्थात् चीन भारत जापान, इण्डोनेशिया बांगलादेश, का यह मुख्य भोजन है। चावल की कृषि में कुछ विशेष सुविधाएँ होती हैं जैसे इसमें विशेष मशीनों की आवश्यकता नहीं होती है छोटे-छोटे खेतों पर भी इसकी कृषि की जा सकती है। तथा अपेक्षाकृत उत्पादन का व्यय भी कम होता है।

मानसून प्रदेशों की सघन जनसंख्या को भोजन प्रदान करने की दृष्टि से चावल ही उपयुक्त अनाज है। इसके दो मुख्य कारण हैं :-

(i) इसकी उपज दर अन्य अनाजों से अधिक होती है।

(ii) जहाँ सम्भव हो, वहाँ चावल की एक से अधिक फसल उगायी जाती है और सिंचाई के द्वारा इसके अन्तर्गत भूमि बढ़ायी जाती है।

यही कारण है कि द० पू० एशिया के अधिक से अधिक कृषि भूमि पर चावल की खेती की जाती है। भारत में चावल 70% जनसंख्या का भोजन है।

वाविलोव तथा प्रसिद्ध रूसी विद्वान वैविलोव के अनुसार :- चावल का प्रारम्भिक क्षेत्र दक्षिणी-पूर्वी एशिया की दलदली नदी घाटियाँ और डेल्टाई भाग हैं। जहाँ यह घास के रूप में उगता था और जिसका प्रचार पूर्वी भारत तथा दक्षिणी चीन में सभ्यता के आदिकाल में हो गया।

दक्षिणी-पूर्वी एशिया की विशेषताएँ जिसके कारण यहाँ चावल एक मुख्य फसल है :-

(i) मानसून एशिया के दक्षिणी और पूर्वी देशों में केवल दक्षिणी पूर्वी एशिया ही ऐसा भाग है जो भूमध्य रेखा के आस पास है तथा आर्द्र अयन वृत्तों के भीतर तक घुस आया है।

(ii) इस प्रदेश का क्षेत्र विस्तृत होने पर भी समुद्र द्वारा इसके स्थल भाग छिन्न-भिन्न कर दिये गये हैं जिससे अधिकांश प्रदेशों में प्रायद्वीप, द्वीपों एवं घाटियों का विस्तार मिलता है।

(iii) इस प्रदेश में वर्षा की अधिकता के कारण नदियों की बहुलता है। ये नदियाँ तीव्रगामी हैं इसलिए इनसे अनेक मैदान एवं डेल्टाओं का भी निर्माण हो गया है।

(iv) इस प्रदेश में उर्वरता आर्द्र उष्ण कटिबन्ध में स्थित अन्य भागों से कहीं अधिक है।

(v) यह प्रदेश रोपण कृषि के उपयुक्त जलवायु एवं धरातलीय स्थिति प्रदान करता है। इसलिए यह यहाँ की जीविकोपार्जन का मुख्य साधन है।

चावल आर्द्र तथा उष्ण कटिबन्ध के आर्द्र भागों का पौधा है। गर्म और आर्द्र वातावरण में ही उगता, बढ़ता और पकता है। इसकी खेती पर जलवायु प्रमुखत: तापमान और वर्षा, धरातल और मिट्टी की दशाओं का अधिक प्रभाव पड़ता है। ये दशाएं चावल की खेती का समय, प्रकार, उपज सभी निश्चित करती हैं। ये चावल उत्पादन की आवश्यक भौगोलिक दशाएं, द० पूर्वी एशिया में प्रधानरूप से मिलती हैं जिसके कारण यहाँ चावल एक मुख्य कृषि फसल के रूप में सामने आता है। चावल उत्पादन की आवश्यक भौगोलिक दशाओं का वर्णन इस प्रकार है :-

(i) जलवायु :-

उपयुक्त तापक्रम :- चावल उष्ण कटिबन्धीय पौधा है। इसके उत्पादन के लिए ऊँचे तापक्रम की आवश्यकता होती है। बीज बोने के समय औसत 20°-21°, प्राथमिक विकास के समय 23°-24° तथा पकते समय 25°-26° सेल्सीयस ताप की आवश्यकता होती है। और यह उपयुक्त तापमान (20°-25°) दक्षिणी पूर्वी एशिया के देशों में पर्याप्त रूप से पाया जाता है।

वर्षा :- चावल उत्पादन के लिए ऊँचे तापमान के साथ-साथ पर्याप्त जल की आवश्यकता होती है। इसीलिए इसकी कृषि अधिक वर्षा वाले देशों तथा मानसूनी प्रदेशों में की जाती है। साधारणतया 100 से 160 सेमी तक के वार्षिक वाष्पीकरण क्षेत्रों में सिंचाई के बिना इसकी खेती सम्भव है। यदि उत्पादन काल में पर्याप्त वर्षा हो। दक्षिणी पूर्वी एशिया के देशों में वर्षा लगभग 200 सेमी तक हो जाती है जिसके कारण चावल उत्पादन आसान हो जाता है।

(ii) धरातल एवं मिट्टी :- दक्षिणी पूर्वी एशिया की मिट्टी भी चावल उत्पादन के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है। यहाँ चिकनी और दोमट दोनों प्रकार की मिट्टियाँ पायी जाती हैं एवं स्तरित संरचना (Layer Structure) की मिट्टी भी पायी जाती है। ये मिट्टी चावल के लिए उपयुक्त हैं। मिट्टियों की ये विशेषताएं द० पू० एशिया में नदियों के बाढ़ के मैदान, डेल्टा प्रदेश तथा समुद्रतटीय मैदानों में पायी जाती हैं। इसलिए ये मैदान ही चावल के प्रमुख स्रोत हैं। इन मैदानों के अलावा चावल की खेती ऊँचे पहाड़ों तथा पर्वतीय भागों में सीढ़ीनुमा खेत बनाकर की जाती है। जापान, ताइवान, चीन, फिलीपाइंस, इंडोनेशिया, तथा भारत में सीढ़ीदार ढालों पर चावल की खेती होती है। इस प्रकार दक्षिणी पूर्वी एशिया

की मिट्टी तथा धरातल भी चावल के लिए उपयुक्त है।

(iii) मानवीय तत्व :- चावल उत्पादन की प्रक्रिया में लगातार मानव-श्रम और सावधानी की आवश्यकता पड़ती है। दक्षिणी-पूर्वी एशिया में मानव की संख्या सर्वाधिक है। जिससे वे आसानी से चावल की खेती के लिए बीज की तैयारी, रोपाई, निराई, कटाई, देवनी आदि प्रक्रियाओं को आसानी से कर लेते हैं। एक ओर चावल की खेती में अधिक, सस्ते श्रम की आवश्यकता होती है, तो दूसरी ओर प्रति एकड़ अधिक उपज द्वारा चावल की खेती अधिक मनुष्यों को भोजन देती है। "घनी आबादी और चावल उत्पादन की प्रमुखता में घनिष्ठ सम्बन्ध है।" चीन, जापान, कोरिया, ताइवान, इण्डोनेशिया (जावा) भारत, बांग्लादेश, आदि प्रमुख दक्षिणी पूर्वी एशिया के चावल उत्पादक देशों की चावल प्रधान सभ्यता और संस्कृति तथा जनसंख्या में अन्योन्य सम्बन्ध प्रतीत होता है। इस प्रकार द० पू० एशिया में सस्ता मानवीय श्रम उपलब्ध हो जाता है।

निष्कर्षत: हम पाते हैं कि दक्षिणी पूर्वी एशिया के देशों में वे सम्पूर्ण उपयुक्त दशाएं पायी जाती हैं जो चावल उत्पादन के लिए आवश्यक है। यही कारण है कि चावल मुख्यतः दक्षिणी-पूर्वी एशिया में उगाया जाता है।